हिंदी एवं नागा जनजाति की भाषाओं का अंतर्संबंध

थुन्बुई
संपर्क : 8974848138

नागालैंड में मुख्य रूप से सोलह जनजातियाँ निवास करती हैं, जिनकी भाषा-बोलियाँ अलग-अलग हैं। इनमें से अंगामी, आओ, लोथा और सुमी ऐसी मुख्य जनजातियाँ हैं, जिनकी भाषाएँ माध्यमिक स्तर तक विद्यालयों में सिखायी जाती हैं। अंगामी भाषा 'तेन्यिदिए' ही एकमात्र नागा-भाषा है, जिसका अध्ययन-अध्यापन स्थानीय स्तर पर उच्च-शिक्षा में होता है। शेष अन्य भाषाओं में कुछ साहित्यिक-रचनाएँ तो हुई हैं, परंतु व्याकरण एवं भाषिक संरचना की दृष्टि से इन्हें सुव्यवस्थित एवं सुविकसित भाषाओं की श्रेणी में रखा जा सके, ऐसी स्थिति ये भाषाएँ नहीं प्राप्त कर पाई हैं। परंतु लोथा एवं आओ भाषा में पर्याप्त साहित्यिक रचनाएँ हुई हैं जिनमें लोक कथाओं के साथ-साथ कुछ वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों को विषय बनाकर उपन्यासों की भी रचना हुई है। जेलियांग भाषा में अपने ऐतिहासिक पात्र रानी 'गाईदिन्ल्यु' एवं 'जादोनोंग' जैसे स्वतंत्रता सेनानियों के जीवनी पर कुछ रचनाएँ हुई हैं। वास्तव में नागा जनजातियों द्वारा अधिकांश मौलिक रचनाएँ अंग्रेजी भाषा में ही उपलब्ध हैं।

अंग्रेजों के समय से ही अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा आरंभ होने के कारण यहाँ के लोगों का झुकाव अंग्रेजी के प्रति अधिक रहा। ऐसी स्थिति में हिंदी भाषा को एक विषय के रूप में पाठ्यक्रम में समावेश करना छात्र-छात्राओं के लिए ही नहीं बल्कि अभिभावकों एवं शिक्षाविदों के लिए भी असहज लगना स्वाभाविक था। कुछ लोगों ने हिंदी भाषा को भारतीय संस्कृति एवं हिन्दू धर्म के वाहक के रूप में भी माना। फिर भी जहाँ तक हिंदी की बात है, स्वातंत्र्योत्तर भारत के दूसरे दशक से ही यहाँ के विद्यालयों में इसके पठन-पाठन का कार्य आरंभ हो गया था। प्रारंभ में सांप्रदायिकता के रंग के प्रभाव को देखते हुए, स्थानीय लोगों ने इसका विरोध एवं बहिष्कार किया और जिन लोगों में विरोध जताने की मंशा नहीं थी, वे भी इस भाषा के प्रति पूर्णतया उदासीन बने रहे। हिंदी के विरोध या उसकी उपेक्षा के पीछे लोगों की यह भी आशंका रही है कि केंद्र सरकार के द्वारा अंग्रेजी को राजभाषा से पदच्युत करके उसके स्थान पर हिंदी को पदासीन करने की पहल की जा रही है। समय के साथ-साथ जब लोगों को लगा कि हिंदी भाषा का हिंदू धर्म या उसके किसी संप्रदाय के प्रचार-प्रसार से कोई संबंध नहीं है, तब शिक्षित नागा समाज ने इसे अपनाना आरंभ किया तथा लोगों में इसे सीखने की प्रवृत्ति भी बलवती हुई। जन-संपर्क भाषा के रूप में व्यापक स्तर पर हिंदी के हो रहे प्रयोग को भी इसकी परिणति मानी जा सकती है, क्योंकि वृहद् भारतीय समाज में रहते हुए इसके

प्रति उदासीन रहना नागा समाज क्या, किसी के लिए भी संभव नहीं है। इतना ही नहीं, व्यावसायिक एवं रोज़गार की संभावनाओं के कारण भी यहाँ के लोगों में इसके प्रति रुझान बढ़ी है।

इन सबके बावजूद जहाँ तक नागा भाषाओं की बात है, इनमें से किसी का भी मूल रूप से हिंदी अथवा किसी अन्य भारतीय भाषा से कोई संबंध न होने के कारण यहाँ के लोगों को हिंदी भाषा सीखने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसके पीछे यह कारण भी है कि इन्हें अपनी मातृभाषा के बाद द्वितीय भाषा के रूप में अंग्रेजी सीखनी पड़ती है, तब तृतीय भाषा के रूप में हिंदी का स्थान आता है। इसके अतिरिक्त हिंदी जैसी समृद्ध भाषा की तुलना में इनकी मातृभाषा की ध्वनि से लेकर वाक्य संरचना तक की अपूर्णता के कारण भी इन्हें हिंदी को पूर्णतया आत्मसात करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यही कारण है कि 'हिंदी भाषा' को अपना मुख्य विषय बनाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले नागा छात्र-छात्राओं को ध्वनियों के घोषत्व एवं प्राणत्व संबंधी उच्चारण, व्याकरणिक कोटियों को सही ढंग से समझने तथा प्रयोग करने और संरचनात्मक दृष्टि से मानक भाषा का प्रयोग करने में कठिनाई होती है।

यदि हिंदी भाषा के स्वरों की बात की जाए तो, चूंकि अधिकांश नागा भाषाओं में ह्रस्व-दीर्घ स्वरों का अंतर नहीं पाया जाता है, इसलिए इनके व्यावहारिक पक्ष के अंतर को समझने में यहाँ के लोगों को कठिनाई होती है। अध्येता को ह्रस्व-दीर्घ स्वरों की परिकल्पना न होने के कारण कभी-कभी अध्यापकों के द्वारा तान-अनुतान के अनुभव को अनुप्रयुक्त करते हुए इनके अंतर को समझाने का प्रयास किया जाता है, जो सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों ही दृष्टियों से सही नहीं है। इसी प्रकार यदि प्राणत्व के आधार पर इनकी भाषा-ध्वनियों का विश्लेषण किया जाए, तो यह पाया जाता है कि अधिकांश भाषा-बोलियों में महाप्राण जैसी ध्वनियाँ हैं ही नहीं। जिन नागा जनजातियों की भाषा अथवा बोली में ये ध्वनियाँ पायी जाती हैं, उनके प्रयोक्ता इनका उच्चारण सहज रूप से कर लेते हैं, परन्तु जिनकी भाषा में इनका अस्तित्व ही नहीं है, उन्हें ख, छ, ठ, थ, फ के सही उच्चारण करने के लिए निरंतर अभ्यास करने की आवश्यकता होती है। घोषत्व के आधार पर यदि ध्वनियों को देखा जाए, तो सामान्यतया अघोष एवं सघोष अल्प प्राण ध्वनियों के उच्चारण में विशेष कठिनाई नहीं होती है, परंतु सघोष महाप्राण ध्वनियों – घ, झ, ढ, ध एवं भ के सही उच्चारण के लिए सायास प्रयत्न की आवश्यकता होती है। ध्वनियों के उच्चारण स्थान एवं प्रयत्न की दृष्टि से कंठ्य, दंत्य, ओष्ठ्य, तालव्य तथा दंत्योष्ठ्य ध्वनियाँ सहजतापूर्वक उच्चरित हो जाती हैं परंतु मूर्धन्य एवं वर्त्स्य ध्वनियों के उच्चारण में इन्हें परेशानी होती है और ड़ एवं ढ़ जैसे उत्क्षिप्त ध्वनियों का उच्चारण तो कुछ लोगों के लिए असंभव सा प्रतीत होने लगता है।

प्राणत्व संबंधी समस्याओं को यदि विस्तार से देखा जाय, तो 'जेलियांग' नामक एक नागा जनजाति की उप-जनजाति 'जेमे' तथा 'लियांगमै' के उच्चारण संबंधी भेद की तुलना की जा सकती है। प्रायः 'जेमे' लोगों की भाषा में महाप्राण ध्वनियों का अभाव पाया जाता है। इनकी भाषा में 'रखना' क्रिया

के लिए 'काइरा' शब्द का प्रयोग किया जाता है, जबकि 'लियांगमै' भाषा में इसी शब्द के लिए 'खाईरा' शब्द का प्रयोग होता है। इन दोनों में केवल 'क' एवं 'ख' का ही भेद है और इसके पीछे ध्वनियों के प्राणत्व भेद को ही देखा जा सकता है। अधिकतर 'जेमे' गाँव के लोग महाप्राण ध्वनियों का उच्चारण नहीं करते हैं। यही कारण है कि जब हिंदी के महाप्राण ध्वनि युक्त शब्दों का यह लोग उच्चारण करते हैं, तब भी अल्पप्राण ध्वनि ही उच्चरित होती है। उदाहरण स्वरूप हिंदी के 'खाना', 'धान' अथवा 'छाता' जैसे शब्दों के उच्चारण में इनके मुख से काना, दान अथवा चाता ही निकलता है। यही कारण है कि हिंदी के अधिकांश महाप्राण ध्वनि युक्त शब्दों के उच्चारण इनके द्वारा स्पष्टतया उच्चरित नहीं होते हैं। यद्यपि यह बात मातृभाषा व्याघात के अंतर्गत ही आयेंगी, फिर भी जब तक भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि से ध्वनियों के उच्चारण प्रत्यय अथवा उच्चारण स्थान की उचित शिक्षा नहीं दी जाती, तब तक इन त्रुटियों को सुधार पाना प्रायः कठिन ही रहता है।

उच्चारण संबंधी समस्याओं के साथ-साथ नागा भाषाओं एवं हिंदी में कुछ संरचनात्मक भेद के कारण भी जब अन्य भाषा के रूप में हिंदी सीखी या सिखाई जाती है तब यहाँ के लोगों को विभिन्न कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। हिंदी भाषा संरचना के अंतर्गत व्याकरणिक कोटियों के 'रूपों' में विकारों की अपेक्षाकृत अधिकता के कारण इनका सही ढंग से प्रयोग करने में नागा भाषा-भाषियों को विशेष परेशानियों का सामना करना पड़ता है। प्रायः यह देखा जाता है कि कारक एवं पुरुष जैसे व्याकरणिक कोटियों के प्रयोग की दृष्टि से हिंदी एवं इनकी भाषाओं में समानताएँ पाई जाती हैं, परंतु लिंग, वचन, काल, वाच्य आदि के प्रयोग में अंतर के कारण इनके लिए शुद्ध एवं स्पष्ट हिंदी का प्रयोग कर पाना मुश्किल हो जाता है।

यद्यपि नागा भाषाओं के सार्वनामिक रूपों एवं संज्ञा पदों में प्रत्यय-प्रयोग से द्विवचन एवं बहुवचन रूप बनाए जाते हैं, फिर भी क्रिया-रूपों में वचन के अनुसार विकार देखने को नहीं मिलता। यही कारण है कि हिंदी भाषा के प्रयोग में भी ये प्रायः क्रिया के एकवचन रूप का ही प्रयोग कर बैठते हैं। लिंग की दृष्टि से हिंदी की तरह ही सार्वनामिक रूपों में कोई भेद नहीं किया जाता है, परन्तु हिंदी में क्रिया-रूपों के विकार से जिस प्रकार सार्वनामिक रूपों के लिंग का संज्ञान हो जाता है, वह व्यवस्था इनकी भाषाओं में नहीं पाई जाती। इसलिए इन भाषाओं को बोलने वाले लोग जब हिंदी का प्रयोग करते हैं, तब मातृभाषा-व्याघात के कारण, लिंग एवं वचन के अनुसार विकृत विविध क्रिया-रूपों का प्रयोग अनायास नहीं कर जाते हैं। इसी प्रकार 'काल' के संदर्भ में भी यह कहा जा सकता है कि भाषा में प्रयुक्त वर्तमान, भूत एवं भविष्य के सामान्य रूप से तो ये परिचित हैं, परंतु हिंदी भाषा के अंतर्गत तीनों के अलग-अलग उपकालों में प्रयोग किये जाने वाले क्रिया-रूपों से अपरिचित होने के कारण इन्हें सीखने में समय लगता है। इसी प्रकार वाच्य,

वृत्ति एवं पक्ष संबंधी भाषिक संरचनाओं में भी नागा-भाषा के प्रयोक्ताओं के लिए सही एवं सटीक हिंदी का प्रयोग कर पाना कठिन हो जाता है।

उपर्युक्त प्रतिकूलताओं के होते हुए भी हिंदी की देवनागरी लिपि की कुछ ऐसी विशिष्टताएँ हैं, जो नागा भाषाओं के लिए उच्चारण एवं लेखन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। इसमें ऐसी ध्वनियाँ हैं जो नागा भाषाओं की दृष्टि से 'रोमन लिपि' में अधिक उपयुक्त हैं। उदाहरणस्वरूप हिंदी में प्रयुक्त 'अनुस्वार' (या हल चिह्न युक्त 'न' एवं 'म') ध्वनि का उच्चारण जिस रूप में हिंदी के शब्दांत या मध्य में किया जाता है, उसका प्रयोग यहाँ की भाषाओं में शब्दारंभ में किया जाता है। इस ध्वनि को रोमन लिपि के माध्यम से लिखना दुःसाध्य सिद्ध हुआ है। जब हिंदी में 'चंदन', 'मम्मठ' या 'नंदन' जैसे शब्दों का उच्चारण किया जाता है, तब चंदन शब्द में 'च' एवं 'द' के मध्य उच्चरित ध्वनि 'न्' तथा मम्मठ में दोनों 'म' के बीच प्रयुक्त 'म्' का प्रयोग यहाँ की भाषाओं के अनेक शब्दों के आरंभ में किया जाता है। यदि इन ध्वनियों का प्रयोग शब्दों के आरंभ में किया जाए, तो कुछ उदाहरण इस प्रकार दिए जा सकते हैं – 'न्दुई' (सभा, सम्मेलन), 'न्की' (आपका या तुम्हारा घर), 'म्बौपुंगो' (स्थान विशेष का नाम)। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिंदी में अनुस्वार के रूप में उच्चरित 'अ' कार रहित दंत्य 'न्' एवं ओष्ठ्य 'म्' का प्रयोग यहाँ की भाषाओं के शब्दों के आरंभ में किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त यहाँ की भाषाओं की एक विशेषता यह भी है कि इनमें तान-अनुतान के प्रचुर प्रयोग पाए जाते हैंं वाक्य स्तर पर तो इसका प्रयोग होता ही है, शब्द या रूप के स्तर पर भी अर्थ्यांतर के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। उदाहरणस्वरूप 'केदी' शब्द का उच्चारण जब 'समरोही' स्तर पर किया जाता है तब इसका अर्थ 'धरती' होता है और जब इसे 'आरोही' तान पर बोला जाता है तब इसका अर्थ 'बड़ा' होता है।

नागा जनजातियों की भाषाओं की एक बड़ी विशेषता यह भी है कि इनके कुछ शब्द देवनागरी की 'ङ' ध्वनि से आरम्भ होते हैं, इन्हें अंग्रेजी के रोमन लिपि में 'ngut-ra' या 'ngam-ra' के रूप में लिखा जाता है। इन्हीं शब्दों को उच्चारण की दृष्टि से देवनागरी लिपि में 'ङुत -रा' या 'ङाम-रा' के रूप में लिखा जा सकता है, जिन्हें अन्य भाषा-भाषी भी आसानी से उच्चारित कर सकते हैं। इस आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि लेखन की दृष्टि से भी देवनागरी लिपि इन नागा भाषाओं के लिए अंग्रेजी के रोमन लिपि की अपेक्षा अधिक सुविधाजनक एवं वैज्ञानिक है।

अंत में यह कहना अनुचित न होगा कि अधिकांश नागा जनजाति भाषाओं की व्याकरणिक एवं संरचनात्मक दृष्टि सुव्यवस्थित न होने के कारण इन भाषाओं का हिंदी अथवा किसी अन्य विकसित या समृद्ध भाषा के साथ तुलनात्मक अध्ययन नहीं के बराबर हुआ है। यदि हमारा उद्देश्य भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन मात्र न होकर, हिंदी का प्रचार-प्रसार करना भी है तो यह उचित रहेगा कि नागालैंड में बहु-प्रचलित एवं लगभग सभी नागा जनजातियों के द्वारा प्रयुक्त 'नागामिज़' बोली का हिंदी के साथ पहले

तुलनात्मक अध्ययन किया जाए ताकि नागामिज़ को एक व्यवस्थित भाषा का रूप प्राप्त हो सके, जिसके फलस्वरूप इस भाषा के माध्यम से यहाँ के लोगों को हिंदी सीखने तथा समझने की नई राह प्राप्त हो सके। जब एक भाषा के रूप में व्यवस्थित नागामिज़ को देवनागरी में लिपिबद्ध किया जाएगा, तब इस भाषा के प्रयोक्ता देवनागरी लिपि से भी भलीभाँति परिचित हो सकेंगे। इसके बाद यहाँ की मूल जनजाति भाषाओं का भी तुलनात्मक अध्ययन सहजता के साथ किया जा सकेगा। इस प्रकार यह आशा की जा सकती है कि संरचनात्मक दृष्टि से हिंदी एवं नागामिज़ की साम्यता तथा नागामिज़ के पूर्व-ज्ञान का लाभ उठाते हुए नागा जनजाति के लोग अपेक्षाकृत सुगमतापूर्वक हिंदी को सीखने तथा आत्मसात करने में सक्षम होंगे।

(**परिचय :** लेखक नागालैंड विश्वविद्यालय, कोहिमा परिसर में हिंदी विभाग के शोध-अध्येता हैं।)